स्नातकोत्तर कला उपाधि (ज्योतिष)
(MAJY)

MJY-002 सिद्धान्त ज्योतिष एवं काल

सत्रीय कार्य(**Assignment**)
(जुलाई 2024 तथा जनवरी, 2025 सत्रों के लिए)

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

एम.ए. ज्योतिष कार्यक्रम
सत्रीय कार्य 2024–25

पाठ्यक्रम कोड : MJY-002 /2024–25

छात्र/छात्राओ !

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जॉच सत्रीय कार्य है, इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्यः आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, इसी का मूल्यांकन करना इस सत्रीय कार्य का उद्देश्य है, यहॉ पाठय सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है।

निर्देशः– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िएः

1. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम पूरा पता और दिनांक लिखिए।
2. बाईं ओर पाठयक्रमय का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे प्रदर्शित हैः

अनुक्रमांकः..

नामः..

पताः..

पाठ्यक्रम का नाम/कोडः..

सत्रीय कार्य कोड...

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोडः............................

दिनांकः...

3. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का प्रयोग करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
4. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
5. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अन्तिम तिथि :

जुलाई 2024 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2025
जनवरी 2025 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2025

विशेष ध्यातव्य :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़े। पुनः इससे सम्बन्धित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अन्त में प्रत्येक प्रश्न के सम्बन्ध में सभी महत्वपूर्ण बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबन्धात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार लिखना चाहिए।

3. यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

    क) आपका उत्तर तार्किक एवं क्रमबद्ध हो।
    ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्टता हो।
    ग) दिया गया उत्तर आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
    घ) कोई भी उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक न हो।
    ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों।

4. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

5. **विशेष** : अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

नोटः विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

MJY-002 सिद्धान्त ज्योतिष एवं काल
(सत्रीय कार्य)

पाठ्यक्रम कोड : **MJY-002** .
सत्रीय कार्य कोड : **MJY-002** /2024–25
कुल अंक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य 02 खण्डों में विभक्त है। सभी खण्ड अनिवार्य हैं। 15 अंक के प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दीजिए। 10 अंक के प्रश्नों का लगभग आठ सौ शब्दों मेंउत्तर देना है।

खण्ड–1

निर्देश– निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए :

15X4=60

1. सिद्धान्त ज्योतिष के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय लिखिये।
2. गोल ज्ञान के विषय में विस्तार से लिखिए।
3. सिद्धान्त स्कन्ध में ग्रहगति के सिद्धान्त का विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. अहर्गण किसे कहते है? इसके स्वरूप एवं साधन की विवेचना कीजिए।
5. मन्दफल एवं शीघ्रफल के सिद्धान्त का विस्तार से उल्लेख कीजिए।
6. सिद्धान्त ज्योतिष के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय लिखिये।
7. काल की अवधारणा का ज्योतिष शास्त्र के अनुसार विस्तार से वर्णन कीजिए।
8. ग्रहकक्षा के स्वरूप का विस्तार से वर्णन कीजिए।

खण्ड–2

4X10=40

निर्देशः अधोलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. क्रान्ति और अक्षांश के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
2. मूर्तकाल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
3. नवविध काल मान के तात्पर्य का वर्णन कीजिए।
4. अधिमास क्या है? ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अधिमास के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
5. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भूगोल के स्वरूप का उल्लेख कीजिए।
6. ग्रह स्पष्टीकरण से आप क्या समझते हैं? उल्लेख कीजिए।
7. ज्योतिष शास्त्र में अहोरात्र व्यवस्था क्या है? वर्णन कीजिए।